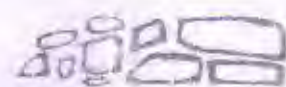


छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह



मि
ल
सा
र



❀ भि न सा र ❀

(अर्त्तिसगदी काव्य संग्रह)



मुकुंद कौशल



विशाल प्रकाशन दुर्ग (मध्यप्रदेश)

□

संस्करण :

प्रथम १९८९

□

कापीराइट :

मुकुंद कौशल

□

मूल्य :

सात रुपये

□

प्रकाशक :

विशान्त प्रकाशन

एम आई जी सी-५१६

पद्मनाभपुर

दुर्ग (मध्यप्रदेश) ४९१००१

○

मुद्रक :

रेजीमेन्टल, प्रेस दुर्ग

□

आवरण :

मोहन गोस्वामी

BHINSAAR : CHHATTEESGADHEE POEMS

BY : MUKUND KAUSHAL 7-00

॥

उन मन वर

जेखर पखीना

महकत हे चन्दन कस,

॥

धुर्ग ला बलो

जऊन मन

माथ मां चुपरथे

चन्दन कस

॥

पाठक मित्रों,

छत्तीसगढ़ी रचनाकारों की बुनियादी समस्या है प्रकाशन । रचनाएँ प्रकाशित न हों, तो पाठको तक वे पहुँचेंगी कैसे ? और फिर दृश्यःश्रव्य माध्यमों के आक्रमण ने तो पाठकों से उनका पढ़ने का समय भी हड़प लिया है । कागज मंहगें हो चले हैं, छपाई भी मजती नहीं, ऐसी परिस्थिति में अधिक पृष्ठों के काव्यसंग्रह का प्रकाशन आसान कहाँ है ? हमने परिपाटी तोड़ी है ।

यह संग्रह आपका अधिक समय भी नहीं लेता । एक ही प्रवाह में इसे पढ़कर आप कवि के स्वर में अपना वैचारिक तादात्म्य स्थापित कर पायेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है ।

हमें प्रतीक्षा रहेगी, आपके बहुमूल्य सुझावों की, आपकी महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं की ।

लिखेंगे न ?

-प्रकाशक

दिशान्त प्रकाशन

एम आई जी

सी ११६ पद्मनाभपुर

दुर्ग (मध्यप्रदेश) ४९१००१

दूरभाष - ३२४६

पानावागी

सूख हर खांसत है	-	1
बनिहार के बिहान	-	2
कस किसान भइया	-	3
बड़ला नौगर	-	4
गाँव के लबारी	-	5
धरले कुवारी	-	6
जितगी के रट्टा	-	7
लीम के डोली	-	8
कहाँ लुकागे मींदर	-	9
चिन्हारी हितवा के	-	10
गोद्वार	-	11
आज नंगा ले हाँसी	-	12
अतल के गंटी पतल के धान	-	13
करम के महिमा	-	14
तोर गरव जेलाख	-	15
आखर के देवता	-	16
गोवई के बात	-	17
सुमता के डोरी	-	18
अइबी चकमास	-	19
भिनसार के गीत	-	20

सूरज हर साँसत है

अंगारा कम पाम इहाँ
ओदरत है आमी जम
कते तनी बिचमे है छॉव ।
मोर भइया रे
अऊ कतका दुरिहा है गाँव ?

राज भलुन परजा के
मोदरा है करजा के
वाली माँ के के के —
कतका दिन खाँव
मोर भइया रे
अऊ कतका दुरिहा है गाँव ?

लकरी है खाँव घर
कुरिया, ओदराण घर
हाथ — मन बिगारी घर
दऊरे घर पाँव
मोर भइया रे
अऊ कतका दुरिहा है गाँव ?

सूरज हर साँसत है
अँधियारी हाँसत है
काँटा कम गइत हवे
अव अपने नाँव
मोर भइया रे
अऊ कतका दुरिहा है गाँव ?



बनिहार के बिहान

कर दे मुलाझी करी गांव में
अब बिहान हो गै बनिहार के ।
नागर हे जेखर जेखर खधि में
मालिक हे खेती अऊ खार के ॥
खा लो रे बाँट - बाँट
मया के कौरा ला
मूड तुम नवा लो रे
सिहनुत के चौरा ला
रात के पहावन के काल दर -
परपौती करबौत बिनसार के ।
बुटुके हे जऊन - जऊन
जिनगी भर ये तन ला
चाँहे कस लागथे
वो मूहरन हम मन ला
ये तौये बेहरा ला आज लो
मसी मन देख लो उषार के ।
कथनी अऊ करली
जेखर ऊपटाल हे
तरि अहर काबिहा
अऊ तषवा सवांग हे
धर देवात अइसन सब दुमुहां के -
ये तकली खंडरी उषार के ।
कऊली नई पाई अब
फोकट के जोगर ला
गढ़े हवन जूर मिन के
मुमता के लौगर ला
कहि देवन आज ले बिगारी ला -
कऊली हर देख लए बिगार के ।

□

बिनसार / २

गाँव के लचारी

गज़ल

काखर तिर गोहरई गाँव के लचारी
काखर तिर ज़ाती के बाक ना उधारी

पसिया ला पी के हम नाकत हल रोधा
लचारा मन झड़कये रात दिन रोहारी

हमर घर तो कमली है रासल के कोठा
आगे घर खुल्लत है देग के दुवारी

घर-घर मेहराबत हैं पीतर अऊ ज़रमत
मूढ़ना खबूदाबत है फलकामिया थारी

सरकारी दफतर माँ गली के फाट
चूरा के मूढ़ माँ जस लीन के मुहारी

देश अऊ बिदेस में बरमत है कला कौशल
धानी अर तरमत है लज्जा महतारी



धर ले कुदारी

विशाल क. मिश्रा

धर ले रे कुदारी गा किसान
आज डिपरा ला खन के डबरा पाट देवो रे ।

ऊँच-नीच के भेद ला मिटाएच बर गरही
चली चली बड़े बड़े ओदराबोंस खरही
जूरमिल गरीबहा मन, संगे मां हो के मगत
करपा के भारा-भारा बंट लेवो रे ।
आज डिपरा ला खन के डबरा पाट देवो रे ।

चल गा पंडित, चल गा साहू, चल गा दिल्लीवार
चल गा शाऊ, चली ठाकुर, चल न गा कुम्हार
हरिजन मन चलो चलो दार-दीदी मन निकली
भेदभाव गड़िया के पाट देवो रे ।
आज डिपरा ला खन के डबरा पाट देवो रे ।

जाँगर पेड़िया हम हवन गा किसान
भोम्हरा अऊ भादों के हवन गा मितान
ये पदत पवरा बर हितवा ला अपन हमन
गाँव के निधानी बर छांट लेवो रे ।
आज डिपरा ला खन के डबरा पाट देवो रे ।

जिनगी के रूढ़ा

जिनगी के रूढ़ा अड़वड़ भस्मा हूँ छित हमरे वरन
गोड़ ला कहौं - कहौं हमन धरन
चले पुरवहिया सनन सनन ।

बिजहा रे डारेन सांगर ब्याएन
धाने के देवता माँ वादर ला ब्याएन
किजोर - किजोर के बरसी रे वादर तूहरे पंदिया धरन
सावन भादों माँ ठंऊका रे बरसित पानी बनन जगन
चले पुरवहिया सनन सनन ।

अगहन माँ बड़ी रे बिहिया नहाएन
धाने लूएन करपा ला बांधिके ले आएन
मन हर चिरई असत पदवी अऊ नाचै भूइया गगन
ब्यारा माँ धइला मन देऊरी कंदाए देऊई बनन धनन
चले पुरवहिया सनन सनन ।

धाने ला श्रेचे वर जावन हुवन मंडी
कऊनो ओई कथरी ले कऊनो ओई अंडी
कऊनो हूँ छोटय दवरिया में कऊनो बपुरा हूँ गावधे भजन ।
गाइ के बइला के छोटा के घन्टी हूँ, राजे दनन दनन
चले पुरवहिया सनन सनन ।

भइया के बिहाव मादिस खोजी खोजी
पुतदा असत भइया, पुतरी कस भऊजी
रात दिने भइया लुहुर - दुहुर भऊजी मुनकावै हो के मगत
भऊजी के सांटी हूँ छम छम बोले चूरी बाजै सनन सनन
चले पुरवहिया सनन सनन



लीम के डंगाली 1555 के लिखली

लीम के डंगाली चषे हे करेला के तार
इतरावये लवरा बादर, घेरी घेरी नाचै रे बीच बजार
ये मिठ लवरा हा ।

ठगुवा कस पानी ह ठगै अऊ मूड घरे बइठे किसान ।
ये हो भइया गा मोर, कइसे बचावो परान ॥
एक बछर नांगर अऊ बइला ला बोर बोर,
ओरिया अऊ छान्ही ले पानी ह गली खोर,
खपरा बीच बोहावै ता ये भाई खपरा बीच बोहावय ।
रवरद - रवरद रोट - रोट रेला मन,
बारी के सेमी वरबट्टी करेला मन,
लूहर - टूहर धाय - धुपुन जावय मां

ये भाई लूहर टूहर धाय धुपुन जावय ।
ये हो भइया गा मोर, पूरा के बड़ नुकसान ।
ये हो संगी गा मोर, कइसे बचावो परान ॥

जामे नीटप्पा कस एगो के सावन में,
गोइ जरै भोम्हरा कस भादो के नहावन में,
दुब्बर बर दूजसाई ता ये भाई दुब्बर बर दू असाई ।
बीजहा भुजावै रे खेत ह सुझावै रे
लडकन अऊ महतारी जम्मो बोबियावै रे
अंगरा मां ठाढ़े ठाढ़े ता ये भाई अंगरा मां ठाढ़े ठाढ़े ।
ये हो भइया गा मोर काबर रिमाए भगवान
ये हो संगी गा मोर, कइसे बचावो परान ।

बिधि के बिधाने मां परबस के साने मां,
घाने के पाने अऊ संझा बिहाने मां,
कीरा के पीरा समाने ता ये भाई कीरा के पीरा समाने ।
सांस के समोना अऊ जिनगी के दोना में
माहू के रोना अऊ बदरा के टोना में,
जम्मो किमानी नंदाये ता ये भाई जम्मो किमानी नंदाये ।
ये हो भइया गा मोर पीरा हर होयै जवान ।
ये हो संगी गा मोर कइसे बचावो परान ।



कहाँ लुकागे मांदर

का होंगे मोर मुलुव ला भइया कइसन घपटे बादर ।

कहाँ गंवागे बंसी येखर कहाँ लुकागे मांदर ॥

सबो कत्ती झगरा बाँस हर अपनेजब धर मां वादे

लिड़ी-बिड़ी छान्ही परचा सब छरी-दरी माहे

अइसन लागत हवै गरीबहा मन के भाग मंदारै

आजादी के बदला परबस गाड़ा तरि फंवागे

राजकाज ला लकवा धर लिम कोदिया होने जाँगर

कहाँ गंवागे बंसी येखर कहाँ लुकागे मांदर ॥

हँकला भर के आँसू रहि गे विसदी भर के हाँपी

परजा के मुरहा टोंटा मां मंहुमाई के काँसी

बोमिया-बोमिया के गोहरावन केंदर केंदर के रोवन

कतेक मोहाटी मन मा हम अंमुअन के बिजहा बीवन

आगी लगए लिखइया मन ला हमर भाग के आखर ।

कहाँ गंवागे बंसी येखर कहाँ लुकागे मांदर ॥

हमर देहला काँच-काँच के ये धोविया मन धोथंय

करजा बोड़ी के बियाज मां टिप-टिप लहू निचोथंय

कऊनो तीरत रथे निचोटी कऊनो झटकय रोटी

गिधवा मन कस चाम जा नौवे कंकवा मन कस बोटी

हमला पाछू मां दंकड़ा के अपन हू रेंगे आगर ।

कहाँ गंवागे बंसी येखर कहाँ लुकागे मांदर ॥

काए करन, जब चारों मूड़ा जरा जलुम के आगी

सहत जाए मां सई बानि भइया कऊनो के पानी

काली के खातिर हम मन ला अऊ सोने बर परही

तभे हमर हितवा बन करके नवां बिहान उतरही

ओ दिन घरबो हाँपि मां हँसिया छाँपि मां घरबो नांगर ।

कहाँ गंवागे बंसी येखर कहाँ लुकागे मांदर ॥



चिन्हारी हितवा के

मुन ले मोर भाई, मुन ले मोर भइया—
अइसन मां होंगे मोर देश के कल्याण, नइ बाँवें रे परान ।
कोन अपन हृवय कोन हृवय रे बिरान, पहिचान ले मितान ॥

दुनिया ले पहिली कस मगखे सिरागै
नदिया के धार भरे भादो मां चिरागै
मोती के का कहिवे मिलय तहीं घोषा
टिपटिप ले बूड़े लागिस जितनी के डोंगा
मुखवा है सहीं मां ईमान के रे तरिया ।

पद लिख के लइका हर खेत ला भूला गै
ददा ओखर सेनागिरी मां बोहागै
चाँदी कस उज्जर मन कर पारिस करिया
इज्जत के कर डारिस चेंदरी कस करिया
गांव ले भगाके इन वनबें गहरिया ।

डेकना, गरीबहा के बने हृवय नेता
मतखे के दुस्मन ले परे है तपेटा
गांव घर मां अप जस अऊ बाहिर बजरंगा ।
पइसा मां मावे है छाकरा लइघना
बाहिर ले हरियर अऊ मितरी मां परिया

दाऊ के ब्यारा मां दंग-दंग ले खरही
तबले गइया ओखर सरही के सरही
बंग-बंग ले सींघर के घुगिया लहान
पोंप पोंप मोटर के पोंगा बनाए
बंगला मां बहठ के इन गावबें ददरिया ।



गोहार

मोर कमइया बेटा बापिस दे दे न सरकार ।
 मोर पोसइया बेटा मोला दे दे न सरकार ॥
 मोर एके सन बेटा रहिस, भाग सिपइहा ओला बनाएवं
 बंगला देस के सनरा जामिस, हाए करम में ओला गंवाएवं
 में ह सियान बह बिमरइन, कोन कमावन कहाँ जावन
 जम्मो शिन बर आए देवारी, हमन राँध के काला खावन
 बवा फटाका ले दे कहिके बिहनिया ले रोवथे नाती
 तही बता मोर का देवारी, का दीया का तेल का बाती
 सनदे-सनदे खाए के खातिर, हमन तो लौघन रहि जावो-
 नाती बर छुरछुरी मोला दे दे न सरकार ।
 मोर पोसइया बेटा मोला दे दे न सरकार ॥
 में ह गरीबहा मनखे भइया बति तमा लइका ला पडाएवं
 काम कहें मिल जातिस कहिके बाबू भइया ला गोहराएवं
 बनी भूति कुच्छ नई मीनिस लोकरी पलो भरती होगे
 देस के रक्षा करहुँ कहिके तो सेना मां भरती होगे
 कतको बेटा मन भइया बर जंग लड़िन परलोक सिधारिन
 अऊ ये मन सिमला मां ओखर जाले भइया ला दे बारिन
 मोरो बह के मांग के सेंदर, माय के टिकली ओट के हौसी-
 जूछा हाथ के चुरी मोला दे दे न सरकार ।
 मोर पोसइया बेटा मोला दे दे न सरकार ॥
 छे दिन होगे लौघन हवन, मांग के लाने बाँऊर सिरागे
 कोन ला कहें कहितो अपन, रोवत-रोवत ओखी पिरागे
 बहुरिया के लुगरा पलो, चंदरी चंदरी हो गे हवय
 मोर संगे बपुरी लईकोरी दुध ला आव्वइ भोगे हवय
 अच सहै नई सकाव में ह काहीं कुछ खा के मरि जातेंव
 ये भगवान उच्चा लेते मोला ये पीरा ले मै तरि जातेंव
 ये जिनगी ले पार जगे बर, अब तो छाती मां भोंगे बर
 पाँच परखंव छुरी मोला दे दे न सरकार ।
 मोर पोसइया बेटा मोला दे दे न सरकार ॥



आज नंगा ले हौंसी

तुही मनन समझाहू हमन ला बिचार के ।
कोन पढ़ही भाग ला हमर में कपार के ॥
रहत परे खेत खार, रहत हे उभंग हो
हौंसी खुसी कुडुक होंगे, भर्यो हमर रंग हो
जियत हवन अइसन जस उमर हे उधार के ।
जर ला अपन जांगर के, दे देखन सेठ ला
मिहनत के हू कौरा मिलए नही पेट ला
पीठ तरि चटकत हे पेट हू बनिहार के ।
अइलाए ओठ हमर, सुवकत हे राज जी
अइसन भां जिनगी हर का रावै फाय जी
काछन लघे पीरा नाचए सहर ला गोहार के ।
रोज कमावन-रोज के खावन नहि ते रखत लावन भा
बेरा ला सुरताए के हमन काखर कर मांगन गा
हमर बर नी आवै कभू दिन हर इतवार के ।
अऊ फतका दिन आधा रह्य ये बनिहार के पेट हर
जियए तो इन पेट के खातिर मरए तो इन पेट बर
तुही मन नियाव करव सोचि अऊ बिचार के ।
का होली का फायन भइया अइसन हमर हाल हे
रंग पछीना-चिखला-माटी, घूरी हर गुलाल हे
हमर खातिर जम्मो दिन हे फायन तिहार के ।
मंही हमर डंढई जौडी पसिया हवै भांग बी
पेट नंगाड़ा मोर हवै तोर बूरी हवै लागि बी
आज नंगाले छिन भर हौंसी जा कऊतो सुखियार के ।

अतल के रोटी पतल के धान

हिलवा मन के का पहिचान
कोत अपन हे कते बिगान
रखवारे खुद खेत ला खा दिस
गवि ला लीलत हे परधान

अतल के रोटी पतल के धान
धरवे मुसुवा धर बुचि कान

मंजिन खोरवा साँझ हे अंधरी
रात बिसरहित मरे बिहान
वेस हू होंगे बिदविद-बिदविद
कतका भेंड़िया बतेक धमान

अतल के रोटी पतल के धान
धरवे मुसुवा धर बुचि कान

अपन सुचारण तबि प्रथम के
अब तो बाँवए लही परान
पर बुधिया मन धमना कूटण
हमर सियनहा परे उतान

अतल के रोटी पतल के धान
धरवे मुसुवा धर बुचि कान

रवरा मन करवा कस बनरे
मनखे होंगे पराहर धान
टऊर तंगा के कोचिया मन हर
इहाँ लगा लिंग अपन दुआन

अतल के रोटी पतल के धान
धरवे मुसुवा धर बुचि कान

ये वस्ती हे मैरा मन के
काखर पूछत हवस मकान
हम मन नइये भात के पुरती
सास मुहँ के वेदरा खाए बीरो पान

अतल के रोटी पतल के धान
धरवे मुसुवा धर बुचि कान



करम के महिमा

दूदिन के जिनगीनी ए
दूदिन आनी आनी ए
दूदिन सबो कहानी रे भइया
दूदिन सब मनमानी ए
रोए धोएजे भाग नी बदले हौस खेज अऊ गाले ।
रे पगला, ये जिनगी के डोंगा—
—खेवत—खेवत पार लगाले ॥

जइसे करवे करम, इहाँ तोर बइसे लेख लिखाही
जउत ह जतका मिहनत करही, तऊत ह ओतका पाही
ते मनखे के जतम धरे अस, जतम ला सुफल बनाले ।
रे पगला, ये जिनगी के डोंगा—
—खेवत—खेवत पार लगाले ।

का साधू का अनी सब का सती, राज का रानी
करम के परचा माँ बिरुखे हे सबके राम कहानी
ये लेखा ला बाँच बँचा ले, जगत में नाच तचा ले ।
रे पगला, ये जिनगी के डोंगा—
—खेवत—खेवत पार लगाले ॥

जपन कथत ते आँखी के ओझा माँ कपट करत हे
मंथूरस असन, बचन के भितरी, आगी लपट बरत हे
साँचा नइये जगत माँ कऊनी, कतकोन किरिया खाले ।
रे पगला, ये जिनगी के डोंगा—
—खेवत—खेवत पार लगाले ॥



तोर गरब कैलास

बोले नहीं रे भूँदया गा, बोले नहीं रे आकाश ।
अपन मरम ला फूल नी बोले, बोले नहीं रे सुवास ।

ये दुनिया के डलटा चलनी,
लंगडा मियनहा होगे
कखरो करनी के सरनी ला,
सिधवा बिकारा भोगे

रंग-रंग के पीतर अरमन माँ का बोले फूल काँस ।

आज लधारी माँच कहाँ,
पाप लड़े नेछरावै
बने ह गिनहा के गून गाँव
पुत्र ह परे अँधायँ

अइताचार के भोम्हरा तोरे का बोले बडमास ।

तोर पखीला हाथए अमरित,
बानी तोर त्रिसवास
ए जूग के तैहर भानीरव,
तोर गरब कैलास

तोरे लाए ले गंगा आही ते जन होवे उदास ।



आखर के देवता

जुग बदलिस,

जिनिस नैवा, जोरो तुम साहित माँ

रहि-रहि के अन पीठाँ

जुन्ना रे डँड ।

आँदरादी,

छान्ही के सरहा सब कमचिल ला

अऊ ओमाँ डारौ

अब नैवा-नैवा कौड़ ।

राजा अऊ रानी के

गोट सबो पहुँचा गै

मन के ये अंगना ला

बने असन धोबी

भाखा के नँदिया हर

भरे हँव टिपटिप ले

साहित के डोली आ

खेत कस पल्लोबी

पहिरावी भाखा ला,

कितिस-कितिस के जुगरा

जुन्ना सब ओन्हा ला

देवी जी छौड़ ।

कलम के लिपइहा मन

उठ बइठव मइया हौ

नैवा सुकज देवथे

स्याही के नेवता

झूपी तुम,

मोर हुलरी भाखा के बइया हौ

वइदिन माँ जामे हौ

आखर के देवता

बरसन के जामे

सब बेड़ी ला टोरी अऊ

खोजी तुम आज

नैवा सुकज के केवाड़ ।



मितवार/१६

गंवई के बात

गंवई माँ आधे त संगी, जावे तै ह मात रे ।
का बतावौ संगी तोला, गंवई के बात रे ॥

लहर लहर लहरावै पुरवहिया ह
नाचै रे मत के मंजुर
मोगरा महक जावे बूडती के अंगना माँ
पिबरा अगरे सिन्दुर

गसवा के रेशम वरात रे ।
का बतावौ संगी तोला गंवई के बात रे ॥

संझा माँ छान्ही के खपरा के झेंझरा ले
गूड़-गूड़ धुनिया उड़ये
संझा के बेरा माँ पिबरा तरङ्गना मे
ललहै मुरज घली बूड़ये

तहल्लि फेर हो जाये रात रे ।
का बतावौ संगी तोला गंवई के बात रे ॥

बिहना के मुफज ह दित के तिरौनी ले
ले ले के धेमा उत्तरये
संझा माँ पिबरी अँजोर ओगरि जावे
चन्दा के अमरित बरसवे

गंवईनी सवाये दूद बात रे ।
का बतावौ संगी तोला गंवई के बात रे ॥



सुमता के डोरी

फागुन हर आगे उड़य गुलाल अऊ अबीर ।
संगी मन जुरिया के गावधे कबीर ॥

झांझ अऊ बंडोरा धूकय सनन सनन
जितनी के गाड़ा रेगें घनन घनन
आज मुस्ता ले रे संगी कसिड़ा ला तीर ।

फागुन के आँखे हरियाए हे मन दोना
माँघ के महीना के हों गे रे गीता
रेसमइहा पुरवाही होवत हे अधीर ।

मोला मिहार ले तैह आज अपन संग
रंग जन छीव, बुझो मोला अपन रंग
जिऊ हर एक हो जावे रह्य दू सरीर ।

आज सब झगरा के हँडिया ला फोरी
सुमता के डोरी ले सब जन ला जोरी
मन मां मया ला धरी मन हे मंदिर ।
संगी मन जुरिया के गावधे कबीर ॥

अइबी चऊमास

येती उती आगू पीछू मगन मुचनुवावत ।
बादर हर साचत हे कनिहा सटकावत ॥

चिरगुन-चिरइया मन सपटे हें छाव मां ।
सावन हर हवरण हवय हमरो गांव मां ॥

पानी हर टूट परे हवय भरमरा के ।
लइका मन मंजा लेवत हवय करा के ॥

चारो कती हरियाली फरियाए हावय ।
गली-गांव खार-खेत बिखलाए हावय ॥

गाय गर जावथें भोम्हरा के नहावन ।
डिपरा मन उल्लत हें डवरी मां सावन ॥

डवरा मन कनिहा मां पाए हें अकास ।
गेडी कूदत हावय अइबी चऊमास ॥



भिनसार के गीत

ठोमहा भर धाम धरे आ गइल बिहान ।
रचरच ले टूटगे अंधियार के सचान ।

छरी-दरौ हो के वगर गो गुजाल ।
पिकराम उत्ती, बेरा होंगे लाल ।
षपड़ी बजावत हें पीपर के पान ।
रचरच ले टूटगे अंधियार के सचान ॥

घर-घर में मिहना के देवता हर जाग ।
अंगना मां छरी कम किरन हर छिचाग ॥
घोन्डत हे व्यारा मा खरही के धान ।
रचरच ले टूटगे अंधियार के सचान ॥

सगन हे किसानित अऊ झुमरत हे घनहा ।
हँसिया-बासी घर के निकलगे किसानहा ॥
अमरइया सावत हे हाँसए खलिहान ।
रचरच ले टूटगे अंधियार के सचान ॥





संक्षिप्त परिचय -

नाम -	मकुन्द कौशल
जन्म -	७ नवम्बर १९४७
जन्मस्थान -	दुर्ग (मध्यप्रदेश)
मरण -	१९६० म

प्रकाशन - १. देश-विदेश की लगभग १५० से अधिक पुस्तकें रचनाओं में एवम् अनेक अखबारों में लेख, कहानियाँ तथा कविताओं का सतत प्रकाशन

प्रसारण - १. आकाशवाणी के रायपुर केन्द्र में रचनाओं का प्रसारण
- आकाशवाणी के एम्बुहट कवि
- दुर्गदर्शन के दिल्ली केन्द्र में छत्तीसगढ़ी गीतों का वृत्त नाटिकात्मक प्रसारण

कौटुम्ब - १. छत्तीसगढ़ी के अमेरिकी गीत विभिन्न कैम्पेस में संगठित

सक्रियता - १. - लंदनी गीत, मानस विहान तथा गुवा विहान के विषय गीत लेखन
- छत्तीसगढ़ी के सांस्कृतिक पुनर्जागरण में उत्कृष्ट योगदान

अंतर्राष्ट्रीय उपलब्धि - अमेरिका के शिकागो विश्व-सम्मेलन में अध्यक्षता
(३० नवम्बर तक चली दुर्ग (जोड़ा) छत्तीसगढ़ी के दुर्ग गीत An anthology of Chattisgarhi Poetries के अन्तर्गत प्रकाशित
- (१९६६) भारत सरकार द्वारा अखिल भारतीय साहित्य प्रतिष्ठान के रूप में कला

सम्पत्ति - राजकीय विभागों (राजकीय बैंक, राज्य सरकार)

सम्पत्ति - भारतीय सरकार के द्वारा (मध्यप्रदेश) ४०५,०००

इस संग्रह के बारे में.....

आई. मुकुंद कोशल का छत्तीसगढ़ी लघु काव्य संग्रह "भिन्नार्थ" आज के हाथों में है। इन रचनाओं के विषय में कुछ कहना एक मीठी, मखर और जीवंत बोली की रचनात्मक शक्ति की निरन्तरता को प्रमाण करना है। इस मानी में मुकुंद कोशल मात्र एक शक्ति नहीं बल्कि सृजन परम्परा को एक कड़ी है।

छत्तीसगढ़ी अंचल लेखन, ऐच्छकीय मुद्रों पर संवाद और विचार आन्दोलन की दृष्टि से एक उबलता हुआ इलाका है। बहुत बड़ी मात्रा में रचनाकार यहाँ लिख रहे हैं और निरन्तर संवाद कर रहे हैं। विचारों की द्वंद्वमयता में जो चिन्मारी छिटक रही है उसकी प्रकाश में रचना उबलती रही है। छत्तीसगढ़ी कविता के मुख पर भोजापन और दुध की मोधी गन्ध भर लही है, अब उसकी आँखों में जागरूकता और आज भी है।

मुकुंद कोशल इस दौर के कवि हैं जहाँ छत्तीसगढ़ी कविता केवल शाब्दिक सौंदर्य लय और ध्वन्यात्मक मिठास तक सीमित नहीं है। लोकगीतों की रोचना, लोक साहित्य के प्रचलित छन्दा में बने आनीष अक्षर के विषा मानकी रूप और मन्त्राओं के उबले चित्र में ही अब बंधी हुई नहीं है उस दौर में वह सामाजिक यथार्थ की कविता बन गई है। अब इसमें सामूहिक दृष्टि एवं चेतना घगघ रही है।

मुकुंद कोशल लम्बे अर्थों में लिख रहे हैं। उनकी कविताओं में उभरता चिंतन और उसकी प्रतिबद्धता उनके यथार्थवादी काव्यधारा से जाइती है। एक ओर जहाँ "मिहनत के चौरा" और पृथु नेत्रों का संदेश उनकी कविता में है वहीं उसने प्रसन्न स्निग्ध आँख सौंदर्य के धर्म अकषण तो वे लोकजीवन के कैनवास पर रचना करते हैं किन्तु उनकी कविता मात्र भावगत संरचना नहीं है बल्कि प्रतिवादी विचार आन्दोलन का गीतमा भी है। अविश्व में वे अपनी रचना में और निहार पैदा करें इस प्रयत्नात्मता के साथ—

२६ जनवरी १९८६

डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव

(हिन्दी विभागाध्यक्ष)

उदिरा कला नर्मल विश्वविद्यालय

खैरातपुर